

## प्रेम का स्वरूप

प्रश्न-स्वामीजी, रसखान सन्त कहते हैं-

बिनु गुन यौवन रूप धन, बिन स्वारथ हित जान ।

शुद्ध कामना ते रहित, प्रेम वही रसखान ॥

कृपा करके इस प्रेम का स्वरूप समझाईये ?

उत्तर-प्रेम ही ईश्वर है । उसी प्रेमसिन्धु की बूँद होने के कारण जीव भी प्रेम ही है । प्रेम जीव का स्वरूप है, स्वभाव है । यह किसी कारण से प्रेरित होकर या किसी फल के लिये जब प्रेम करता है तबवह कारण और फल ही आँख में किरकिरी के समान प्रेम की धारा को विच्छिन्न, अभावग्रस्त और परोक्ष बनाने लग जाता है । प्रेम बहुत सूक्ष्म है । यह गुण, भाव, आचार, रूप, दूरी प्रतिकूलता, ऐश्वर्य, माधुर्य, अवस्था, सम्पत्ति, अधिकार, जाति स्वसुख, स्वार्थ आदि पर आश्रित नहीं है । प्रेम में शरीर, जन्म-मृत्यु की परवाह नहीं है । यह कभी टूटता नहीं है । इसमें कड़वा या मीठा किसी प्रकार का स्वाद नहीं है । यह अनुभव स्वरूप है । जब भी कभी छलक पड़ता है तब इसकी एक फुही का करोड़वाँ हिस्सा मन और वचन को छूता है और इतने से ही वे मतवाले हो जाते हैं । यह जिसके जीवन को छू लेता है वह मत्त, स्तब्ध, आत्माराम रह जाता है । उसकी तृप्ति के लिये कर्म, योग, उपासना, ज्ञान की अथवा सुख, अमृत, समाधि, सालेक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य और कैवल्य की आवश्यकता नहीं । कर्म, उपसाना

और ज्ञान से प्रेमी के मल, विक्षेप और आवरण रूप दोष दूर होते हैं । यह प्रेमी की आत्मशुद्धि है । भक्ति से प्रियतम के स्वरूप का शोधन होता है । शुद्ध प्रेम में प्रेमी और प्रियतम डूबते उतराते रहते हैं । प्रेमी और प्रियतम दोनों ही प्रेम के विलास हैं । 'मैं प्रेमी हूँ और यह प्रियतम' यह अवस्था भी किंचित् काममिश्रित है । शुद्ध प्रेम-शुद्ध प्रेम ही है । वही प्रियतम है, वही प्रेमी है ।

उसमें किसी अवलम्ब की आवश्यकता नहीं पड़ती । शुरू-शुरू में किसी न किसी उपाधि को लेकर प्रेम प्रारम्भ होता है । पीछे चलकर उपाधि पर दृष्टि नहीं रहती । अपने प्यारे की आत्मापर, सुख पर दृष्टि रहती है । इसी दोष को देखकर प्रेम घटता नहीं, गुण देखकर बढ़ता नहीं । घटना-बढ़ना प्रेम का स्वभाव ही नहीं है । साधक के जीवन में वह क्षण-क्षण बढ़ता जाता है और सिद्धके जीवनमें एकरस रहता है । प्रेममें जीने-मरने का कोई अर्थ ही नहीं है । सोना और जागना एक है हँसना और रोना विवर्त है (बाहरी वस्तु है) ।

एक बुढ़िया को सन्त सद्गुरु ने बालगोपाल की गोलमटोल काली-काली मूर्ति दे दी और कह दिया के इसको अपना बच्चा समझकर पूरे प्यार से लालन-पालन करना । वह माई अनुराग में भरकर कभी अपने प्यारे-प्यारे नन्हें से गोल-मटोल गोपाल को हिंडोले में पौढ़ाकर झुलाती, लोरी गाती, गोद में सुलाती, तरह तरह से लाड़ लड़ाती और मंगल मनाती रहती । एक दिन गाँव के बालकों ने हँसी-हँसी में कह दिया-अरी मैया, इधर

एक ऐसा भेड़िया आ गया है, जो बच्चों को उठा ले जाता है ।  
यह सुनकर मैया डर गयी और ठाकुरजी को कुटिया में विराजमान  
कर दिया और खुद लाठी लेकर दरवाजे के बाहर डट गयी ।  
पाँच दिन, पाँच रात पहरा देती रही । उसका यह भोरा-भारा  
प्रेम देखकर प्रभु के मन में आया कि इसका यह मीठा-मीठा भाव  
मैं चखूं । ऐसी मैया तो मेरी होनी चाहिए । वे परम सुन्दर रूप  
धारण करके सुन्दर वस्त्राभूषणों से बनठनकर मुस्कराते हुए उसके  
सामने आये । पाँव की आहट सुनकर ही मैया को डर लगा कि  
कहीं भेड़िया न आया हो । उसने लाठी उठाई । श्यामसुन्दर ने  
कहा-मेरी मैया ! मैं वही बालक हूँ जिसकी तुम रक्षा  
करती हो ।

माई ने डाँटा-‘चुप ! फिर ऐसी बात जुबान पर मत  
लाना । तुम उसके बराबर नहीं हो सकते । तुम्हारे जैसे सैकड़ों  
चमकने उसपर न्यौछावर कर दूँ ।’ प्रभु प्रसन्न हो गये । बोले-  
‘अरी मैया, मैं त्रिलोकीनाथ भगवान् हूँ । मुझसे जो चाहो  
माँग लो ।’

माई ने कहा- तब मैं आपको सौ-सौ प्रणाम करती हूँ ।  
आप कृपा करके मुझे यह वर दीजिये कि मेरे प्राण प्यारे  
लालन को भेड़िया न चुरा सके ।

प्रभु ने कहा-तुम अपने बच्चे को लेकर मेरे धाम में चलो  
वहाँ कभी भेड़िया आने का डर नहीं है । उसको अपनी माँ  
बनाने के लालची प्रभु इस प्रकार फुसलाकर अपने श्रीगोलोक-

धाम में ले गये । सुषमासदन, सौन्दर्य माधुर्य लावण्यनिधि श्याम सुन्दर स्वयं उसके सामने प्रकट हुए परन्तु माई का मन अपने गोल-मटोल गोपाल लाल से नहीं हटा । यही शुद्ध प्रेम का स्वरूप है ।

प्रश्न-परमपूज्य श्रीस्वामीजी ! उत्कण्ठा का क्या स्वरूप है ?

उत्तर-उत्कण्ठा दो प्रकार की होती है-एक तो प्रथम मिलने से पूर्व नाम, गुण, रूप, शील, स्वभाव वंशीध्वनि चित्रपट आदि देख सुन कर प्रियतम से मिलन की उत्सुकता और दूसरी एक बार या अनेकबार मिलन हो जाने के बाद प्रियतम से मिलने के लिए व्याकुलतापूर्ण आकांक्षा, आशा, विश्वास पूर्ण प्रतीक्षा और प्राणों का कण्ठ में लग जाना, दिल का आँखों में आ जाना ।

आज श्रीरामचन्द्र के वनवास का चौदहवाँ वर्ष पूर्ण हो गया है । श्रीअयोध्या में पुरजन, परिजन, रनिवास, भाईबन्धु के सहित श्रीभरतलालजी का हृदय आशा-निराशा के झूले में सुख-दुख के झोटे खा रहा है । उसी समय हनुमान के द्वारा पुष्पक विमान से लक्ष्मण सहित युगलसरकार के आने का सम्वाद मिलनेपर ऐसी उत्कण्ठा बढ़ी कि चौदह वर्ष बिता लेने के बाद यह घड़ी दो घड़ी काटना भी कठिन हो गया । विछोह की पीड़ा है, मिलन सम्वाद का हर्ष है; मिलन की प्रतीक्षा है परन्तु चैन नहीं है । छतपर चढ़कर दूरतक देखते हैं, जंगलों की ओर भागते हैं । विछोह पीछे छूट रहा

है और मिलन आगे से आ रहा है । दोनों की सन्धि में उत्कण्ठा का निराला ही दृश्य है । किसी उत्कण्ठावान् की दिन से अपना दिल मिलाकर उसका अनुभ करना चाहिये ।

प्रश्न-ईश्वर अपने प्यारे भक्तों को किस प्रकार सम्भालते हैं ?

उत्तर-तीन प्रकार से

(एक) जैसे गाय अपने मैल लगे हुए बच्चे को चाटती है, जी भर दूध पिलाती है; वैसे ही भगवान् अपने मैले कुचैले भक्त के अपराधों को भी अपना भोग्य बना लेते हैं और अपने सम्बन्ध में की हुई उनकी प्रत्येक लालसा पूर्ण करते हैं ।

(दो) जैसे बिल्ली अपने बच्चे को मुख में लेकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाती है; वैसे ही भक्तों की इच्छा न होने पर भी भगवान् उन्हें दुःख से बचा कर सुख पहुँचाते हैं ।

(तीन) जैसे वानरी अपने बच्चे को हृदय से लगाये रखती है, वैसे ही प्रभु अपने भक्तों को अपनी गोद में रखते हैं ।

प्रश्न-‘सच्चे साईं ! श्री कौशल्या, श्रीयशोदा, श्रीदशरथ और श्रीनन्द तो नित्य हैं; फिर यह वर प्राप्त करने वाले मनु, द्रोणवसु, शतरूपा, धरा आदि कौन हैं ? फिर इनको, भगवान् को पुत्ररूप में प्राप्त करने का सौभाग्य कैसे मिलता है ?

उत्तर-जो नित्य हैं; वही वर प्राप्त करने वालों के हृदय में प्रवेश करते हैं । तभी उन्हें लीला का वह अधिकार प्राप्त होता है ।

प्रश्न-बाबल साई ! मैया ने तो श्यामसुन्दर को ऊखल से बाँध दिया और रतिवन्ती ने सुनते ही प्राण छोड़ दिये, तो प्रेम किसका अधिक हुआ ?

उत्तर-मैया यशोदा रतिवन्ती जैसी प्रेम की कोटि अवस्थाओं से परे है । लीला के लिए विशाल हृदय की आवश्यकता है । अगर पद-पद पर व्याकुल हो जाँय तो लीला का आनन्द कैसे बने ? मैया का हृदय रतिवन्ती से कोटि गुना अधिक प्रेम पूर्ण है ।

प्रश्न-प्यारे साई ! यदि ऐसा प्रेम था तो मैया ने श्यामसुन्दर को बाँधा क्यों ?

उत्तर- जब उन्होंने ईश्वरता दिखाई तो बाँधे गये । वात्सल्य रस की अधिष्ठात्री मैया के सामने ईश्वरता दिखाना अपनी हेकड़ी जताना, 'मैं विश्वरूप हूँ' तेरी रस्सी में नहीं बँध सकता, यह कोई भले बालक का काम थोड़े ही है । मैया तो सचमुच ही उनको अपना बालक मानती है । उसका भाव पूर्ण है, परन्तु श्रीकृष्ण चूक गये । ईश्वरता दिखाने लगे, तब मैया ने ईश्वरता को ऊखल से बाँध दिया । श्यामसुन्दर ने भी मैया के पूर्ण भाव के सामने अपनी अपूर्णता दिखाने के लिये बन्धन स्वीकार किया ।

प्रश्न-गरीब निवाज ! सविशेष, निर्विशेष आदि ज्ञान की बातें भक्तों को भी जाननी ज़रूरी है क्या ?

उत्तर-बिल्कुल नहीं ! भोरापन ही भक्त का स्वरूप

है । भोले के लिये प्रभु भी भोले होकर अपनी सर्वज्ञता छोड़ देते हैं । करमा बाई लगातार पचास वर्ष तक प्रतिदिन खिचड़ी खिलाती रही । जब वह श्रीगोलोकधाम चली गयी, तब भी कई दिनों तकवे उसके दरवाजे पर आकर 'माँ ! माँ ! मुझे खिचड़ी दो-ऐसा पुकारते थे ।

जनाबाई का पल्ला पकड़कर नन्हां-सा विठ्ठलनाथ चलता था और वह मधुर स्वर से, अरे आओ विठ्ठल ! आओ विठ्ठल ! कहती चलती थी ।

रांका बांका का प्रभु में अत्यन्त मधुर भाव था । एक दिन नामदेवजी उसकी कुटिया के पास से जा रहे थे तो भीतर से बहुत सी मीठी मीठी बातें आ रहीं थी । उन्होंने छिपकर देखा कि नन्हें से श्यामसुन्दर उसकी गोद में बैठे हैं और धीरे-धीरे कुछ कह रहे हैं ।

श्यामसुन्दर- देखो बाबा ! आज मेरी कमर में कैसा घाव हो गया है ? दर्द हो रहा है ।

रांका-क्यों बेटा ?

श्यामसुन्दर-आज मुझे नामदेव के कारण कमर में रस्सी डालकर मन्दिर को फिराना पड़ा ।

बांका-ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे बेटा ! यह नामा बहुत निष्ठुर और कठोर हृदय है । उसको इतना सोचने की भी बुद्धि नहीं है कि नवनीत-सा कोमल, कुसुम-सा, सुकुमार कन्हैया

ऐसा कठोर काम कैसे करेगा ? बेटा ! तुम उसकी ऐसी बातें मानते ही क्यों हो ?

श्यामसुन्दर-क्या करूँ बाबा ! वह तो बार-बार रोता, चिल्लाता, पुकारता था ।

बांका-नामा कभी मुझे मिल जाय तो ठीक कर दूँ ।  
मेरा भोला-भाला बच्चा ऐसा कठोर काम क्या जाने ?

इतने में रांका हल्दी हलुआ ले आई और ठाकुर को अपनी गोद में सुलाकर सेंकने लगी । ठाकुरजी बार-बार कराहने लगते ‘ओह, ओह धीरे ! धीरे !!’ रांका बांका कभी नामदेव को कोसते, कभी श्यामसुन्दर को हृदय से लगाकर चूमते, आशीर्वाद देते ।

यह अद्भुत दृश्य देखकर नामदेव जी आश्चर्यचकित हो गये और अन्दर जाने लगे । ठाकुरजी दूसरा रूप धारण कर बाहर निकल आये और रोककर बोले-“ठहरो, ठहरो ! अन्दर मत जाओ । वे इस समय गुस्से में हैं । तुम्हें कच्चा चबा जायेंगे बेटा !

नामदेवजी बोले-आप उनके साथ यह क्या नखरे कर रहे हो ?

प्रभु ने कहा-जो भक्त जिस भाव से मुझे प्यार करता है, उसके लिये मैं वैसा ही बन जाता हूँ ।